तृतीय अध्याय

''चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज का स्वरूप''

''चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज का स्वरूप''

3.1 वर्तमान समाज का स्वरूप -

वर्तमान समाज मुख्यत: तीन वर्गों में विभाजित है। वे तीन वर्ग हैं - (1) उच्च वर्ग, (2) मध्यवर्ग (3) निम्न वर्ग।

3.1.1 उच्च वर्ग -

भारतीय समाज में आर्थिक दृष्टि से उच्च, मध्य और निम्न ये तीन वर्ग मिलते हैं। उच्च वर्ग आर्थिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। लेकिन अन्य दो वर्गों की तुलना में इस समाज के लोग अत्यंत कम हैं। फिर भी उच्च वर्ग धन प्राप्ति की लालसा से ग्रस्त है। आर्थिक दृष्टि से समृद्ध होकर भी धन के लिए यह समाज मानवी मूल्यों की हत्या करता है और मध्य तथा निम्न वर्ग का शोषण करता है। उच्च वर्ग के पूँजीपति समाज में स्थित उत्पादन के साधनों पर अपना संपूर्ण अधिकार रखते हैं और अपना धन बढ़ाते हैं। इसके लिए वे अन्य वर्गों का शोषण करते हैं।

3.1.2 मध्य वर्ग -

संपूर्ण भारतीय समाज में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग की तुलना में मध्य वर्ग ही संख्या की दृष्टि से बहुत अधिक है। इस वर्ग के लोग कुछ हद तक सुखमय जीवन बिताते हैं तो कुछ लोग बड़ी कठिनाई से जीवनयापन करते हैं। मध्यवर्ग के भी दो भेद किए जा सकते हैं - (1) उच्च मध्य वर्ग और (2) निम्न मध्य वर्ग।

3.1.3 निम्न वर्ग -

निम्न वर्ग के पास उत्पादन का कोई साधन नहीं होता। यह समाज प्रत्यक्ष श्रम करता है, मेहनत की रोटी पाता है। 'हिंदी साहित्य कोश' में निम्न वर्ग के संबंध में लिखा है - ''यह समाज का

वह भाग है, जो अपनी जीविका का उपार्जन, श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का ही शोषण किया जाता है। इस वर्ग के अंतर्गत किसान, मजदूर आते हैं।''[1]

निम्न वर्ग रोजी-रोटी की समस्या का हल करने में लगा रहता है। डा. वीणा गौतम उच्च निम्न वर्ग के बारे में लिखती हैं - ''यह स्वयं को निम्न वर्ग के निकट लाने में सतत प्रयत्नशील रहता है। उसमें ईमानदार वेतन भोगी कर्मचारी आते हैं, जो अपनी ईमानदारी के परिणामस्वरूप प्रतिदिन निर्धन हो रहे हैं।''[2]

3.2 मध्य वर्ग : परिभाषा एवं स्वरूप -

आज 'मध्य वर्ग' यह शब्द सामान्यत: बीच की श्रेणी या स्तर के लोग जो न गरीब होते हैं, न अमीर के अर्थ में अधिक प्रचलित है। यह शब्द अंग्रेजी शब्द मिडल क्लास का समानार्थी है। 'मानक हिंदी कोश' में मध्य वर्ग के बारे में लिखा है - ''मनुष्य समाज के आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से विभाजित वर्गों (उच्च, मध्य, निम्न) में से बुद्धि प्रधान एक वर्ग जो सामान्य आर्थिक स्थिति तथा सामाजिक स्थितिवाला समझा जाता है और उच्च वर्ग (धनी वर्ग) और निम्न वर्ग (श्रमिक वर्ग) के बीच में माना जाता है।''[3]

'हिंदी साहित्य कोश' में मध्य वर्ग के संबंध में लिखा है - ''पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने समाज को इतना जटिल कर दिया है कि एक मध्य वर्ग की भी आवश्यकता हुई, जो जटिल व्यवस्था के संगठन सूत्र को संभाल सके। इस वर्ग में नौकरी पेशा, शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्य वर्ग विशेषत: बुद्धिप्रधान वर्ग माना गया है और सामाजिक क्रांति के प्राय: समस्त विचारों का सर्जन मध्य वर्ग में ही होता है।''[4]

मध्य वर्ग के संबंध में गोविंद सदाशिव धुर्ये के विचार हैं - ''सामाजिक जगत में जहाँ केवल तीन वर्गों को दृष्टिपथ में रखा जाता है, मध्य वर्ग पूँजीपतियों तथा श्रमिकों के दो चरम सीमा पर पहुँचे हुए वर्गों में केंद्रिय स्थिति रखता है और वह समाज का मुख्य प्रयोजन पूर्ण करता प्रतीत होता है।''[5]

मध्य वर्ग को भूपसिंह भुपेंद्र इस प्रकार परिभाषित करते हैं - ''यह वर्ग उच्च तथा निम्न वर्ग की अपेक्षा अधिक व्यापक, संवेदनशील, प्रेरक तथा अपनी विशिष्ट दुर्बलताओं से ग्रस्त होता है।''[6] 'दि कम्पेक्ट एडिशन आफ दि ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी' में लिखा है कि - ''मध्य वर्ग समाज के उच्च तथा निम्न वर्ग के बीच का वर्ग है।''[7]

डॉ. अर्जुन चव्हाण ने मध्य वर्ग की परिभाषा इस प्रकार की है - ''मध्य वर्ग न किसी यंत्र से उत्पादित वस्तु है और न किसी सरकार द्वारा बनाया गया कानून। यह आधुनिक परिस्थितियों की उपज है। सामंतवादी अर्थ व्यवस्था के लोप तथा पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नवोन्मेष से उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग के बीच अधर लटका हुआ तीसरा वर्ग उदित हुआ जिसे मध्य वर्ग कहा जाता है।''[8]

विभिन्न विद्वानों ने मध्य वर्ग की परिभाषा दी है। उनमें कम-अधिक मात्रा में समानताएँ भी हैं और विभिन्नताएँ भी। यहाँ तक बात ध्यातव्य है कि समाज का वर्ग विभाजन जिन प्रमुख कसौटियों के आधार पर किया जाता है उनमें प्रधान है 'अर्थ'। अर्थ के आधार पर आज संपूर्ण समाज तीन वर्गों में विभाजित दृष्टिगोचर होता है। उच्च तथा निम्न वर्ग के बीच एक तीसरा वर्ग भी है और यही वर्ग मध्य वर्ग है। यह वर्ग पूर्णतः साधन संपन्न होता है और न ही पूर्णतः अभावग्रस्त। साधन संपन्न होने के कारण उच्च वर्ग चिंताग्रस्त है। और सोच तथा क्षमता के अभाव के कारण निम्न वर्ग चिंता मुक्त है। किंतु मध्य वर्ग ही समाज का ऐसा वर्ग है, जो सोच, समझ तथा क्षमता होने तथा अभावग्रस्त होने के कारण चिंतित और दुःखी जीवन जीता है। आधुनिक समाज में यही वर्ग अधिक मात्रा में है। समाजिक परंपराओं का वाहक भी यही वर्ग है।

3.3 चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्य वर्ग -

चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित पात्रों पर दृष्टि डालने पर यह विदित होता है कि उनमें अधिकांश पात्र शिक्षित, नौकरी पेशा हैं।

लेखिका के 'सूरज उगने तक' और 'दहलीज पर न्याय' आदि कहानी संग्रह की कहानियों के पात्र बहुतांश मध्य वर्ग के हैं। कहानियों में चित्रित कुछ मध्यवर्गीय पात्रों तथा परिवारों की आय का स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है, तो कुछ का नहीं मिलता।

'सूरज उगने तक' -

शीर्षक कहानी का नायक विमल निम्न-मध्यवर्गीय युवक है। पिताजी सरकारी लोन लेकर बेटे को इंजीनियर बनाते हैं। लेकिन विमल ईमानदार होने के कारण मिली हुई नौकरी छोड़ देता है। चीफ इंजीनियर दर साहब के भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज उठाने के कारण उसे नौकरी से निकाला जाता है। वह दुसरी ओर नौकरी के लिए जाता है तो उसे कहा जाता है कि "हमें खुशी होती आप हमारे यहाँ काम करते। आपकी युनिवर्सिटी की तरफ से आपके अच्छे विद्यार्थी होने की सिफारिशें आयी हैं। पर दर साहब आपके काम से असंतुष्ट हैं।"[9]

बड़े लोग या अधिकारी गरीब युवकों पर किस तरह अन्याय करते हैं। विमल नौकरी की तलाश में दर-दर की ठोकरे खाकर घर बैठता है। इसका चित्रण कहानी में अंकित है।

'दहलीज पर न्याय' -

कहानी की नायिका रूक्की मध्यवर्गीय परिवार में रहनेवाली युवती है। शादी के पाँच साल बाद उसे बच्चा होता है। इस खुशी के कारण वह बच्चे को लेकर देवी माँ के दर्शन करने जाती है। तब महंत उसे अपने बेटे की बलि देनी पड़ेगी ऐसा कहता है। रूक्की घबराकर गाँव छोड़ देती है और पुलिसथाने जाती है। पुलिसवाले उस पर अत्याचार करते हैं। मनुष्य के रक्षण करनेवाले ही अब भक्षण कर रहे हैं।

'कित्थे जाणां पुत्तर ?' -

कहानी की प्रमुख बेजी है। बेजी के घरवालों में से एक भी जिंदा नहीं रहता। उन्हें आतंकवादी मारते हैं। लोगों को लगता है कि परिस्थिति सुधरेगी। "हालात सुधरेंगे, इसी उम्मीद में जान हथेलियों पर रखे लोग सरेशाम खिड़कियाँ-द्वार बंद किए बैठे रहे पर मौत बंद दरवाजों से पलटती है कभी ? इधर शेरसिंह के चार, उधर करतार सिंह के पाँच आदमी कटे पड़े मिले। हत्यारों ने बूढ़ों, बच्चों जवानों किसी को भी न बख्शा।"[10] कहानी में आतंकवादी गरीब लोगों को लूटते हैं। देहातों में हर तरफ आतंकवाद का डर गरीब लोगों के माथे पर दिन-रात है। आतंकवादी किसी भी क्षण में आकर

गोली से गरीब लोगों को मार देते हैं। इस कहानी में मध्यवर्गीय लोगों की यातनाओं का चित्रण किया है।

'रहमते बारान' -

कहानी की नायिका सुषी की सहेली हसीना एक निम्न-मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है। आतंकवादी उसके भाई को सरकारी जासूस समझकर मार डालते हैं। आतंकवादी के डर से उसके पड़ोसी शहर छोड़कर दूसरे शहर में जाते हैं। आतंकवादी के डर से गरीब लोग गाँव छोड़कर कई दूसरे शहर में अपना काम-धंदा करते हैं और उपजीविका चलाते हैं। यही समस्या मध्य वर्गीय लोगों को सताती है। इसका चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है।

'नानी तुम ?' -

कहानी की नायिका प्रिया अमरिका में जाकर एम्. डी. करती है और वहीं अस्पताल में नौकरी करती है, पति व्यापार करते हैं। दोनों प्रेम विवाह करके खुशी से जिंदगी जी रहे थे, लेकिन सालभर ठीक चलने के बाद अचानक उनमें झगड़ा होता है। दोनों अलग-अलग रहते हैं। मध्यवर्गीय दांपत्य के आय का संकेत स्पष्ट रूप से कहानी में मिलता है।

'मामला घर का' -

कहानी का नायक शिब्बू मध्यवर्गीय परिवार का जिम्मेवार युवक है। शिब्बू गरीबी के कारण घर छोड़कर बचपन में ही शहर में आता है। शिब्बू का बड़ा परिवार था। माता-पिता, दो भाई, एक बहन थी। विवाह के पाँच-एक साल बाद वह अपने महानगर में आता है। पत्नी बच्चों के साथ घर आता है। लेकिन घर में माँ और पिताजी नहीं हैं वे कब के चल बसे हैं, सिर्फ एक बीमार रिटायर पुलिसभाई रहता है। शिब्बू की पत्नी उम्मी अपने बीमार देवर को साथ लेकर चलने की सलाह अपने पति से देती है। इस कहानी में मध्यवर्गीय परिवार की आय का संकेत स्पष्ट रूप में मिलता है।

'तुमने कोशिश तो की' -

इस कहानी में एक माँ अपने बेटे के प्रति अत्यंत प्रेम करती है, इसका चित्रण किया है। कहानी का नायक प्रणव मध्यवर्गीय परिवार का लड़का है। पिताजी प्रोफेसर हैं। उनका अच्छा-खासा नाम है। प्रणव को एम्. एस्. की पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी मिलती है। लेकिन प्रणव नौकरी नहीं करता कम्प्युटर टेक्नॉलॉजी के बार में जानने के लिए। पढ़ने के लिए विदेश जाता है। माँ, बेटा हाथ से जाने के डर से यहाँ अपने देश में नौकरी करने की सलाह देती है, लेकिन आज के युवक अपना नाम कमाने के लिए अपने देश को भूल रहे हैं।

'बात ही कुछ और '-

प्रस्तुत कहानी की नायिका 'सुहानी' उच्चवर्गीय परिवार की लड़की है। इंजीनियरींग में पढ़ती है। बड़ा भाई अमरिका में डाक्टर है। सुहानी अपने सहपाठी जतीन नामक लड़के से प्यार करती है। सुहानी जतीन से शादी करना चाहती है। लेकिन जतीन उसे धोखा देता है। आखिर धोखा खाकर सुहानी चूप बैठती है। आज पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण उच्च वर्ग के लोग कर रहे हैं।

'सच और सच का फासला' -

प्रस्तुत कहानी में श्रीधर मल्ला नामक एक मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है। श्रीधर मल्ला अपनी पत्नी, बच्चों और चारबहनों के साथ घर में रहता है। गरीबी के कारण तीन बहनों को अविवाहित रहना पड़ता है। सिर्फ एक ही शादीशुदा है। तीनों बहनों में से प्रेमा सुंदर लड़की है। उसके कारण ही दूसरी बहनों की शादी नहीं होती। कोई भी देखने आए तो प्रेमा को ही पसंद करते हैं। इसी कारण प्रेमा किसी दूसरे जाति के काका नामक युवक के साथ भाग जाकर शादी करती है। तब मुहल्लेवाले श्रीधर मल्ला पर किचड़ उछालते हैं और कहते हैं - ''लड़की के चाल-चलन अच्छे नहीं थे। हमें मालूम था।''[11] श्रीधर मल्ला के खानदान पर नमिटनेवाला धब्बा लगाते हैं। गरीब लोगों को आर्थिक परिस्थिति के कारण लड़कियों की शादी करना भी कठिन होता है।

'जंगली जलेबी' -

कहानी का नायक गणेशी और उसकी पत्नी लक्ष्मी गरीबी के कारण महानगर में आते हैं। दोनों निम्न-मध्यवर्गीय हैं। वे ज्योति शर्मा के यहाँ रहते हैं। गणेशी हर रोज काम के लिए दफ्तर में जाता है। लक्ष्मी उच्च वर्ग की ख्वायिशें देखकर किसी पर पुरुष के साथ संबंध रखती है और ऊपर से कहती है, ''गरीब आदमी जानकर सभीच धमकाता। गाम से इधर आया, कमाएगा, दो रोटी खाएगा, पर चैन किधर भी नई। कभी वो बोलता कभी ये बोलता। पेड़ पर मत चढ़ो, इससे बोलो मत, उससे हँसों मत। ऐसे रोओ मत, कितना सुनेगा, हम आदमी हैं जिनावर नहीं, बोत ही गया, अब नहीं सुनेगा। जाएगा किधर भी। तुम्हारा सुना, तुम्हारा आदमी का सुना। हम गन्दा हो गया। तुम्हारा आदमी गन्दा नई हुआ, जाकर उसको सुनाओ।''[12] इस तरह मध्य वर्गीय दामपत्य का चित्रण कहानी में किया है। उसके आय का स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है।

'प्यारिया तो बौरा गया' -

कहानी का नायक प्यारिया निम्न-मध्यवर्गीय परिवार का लड़का है। बचपन में ही पिताजी का देहांत होता है। माँ बरतन माँजकर घर चलाती है। जब प्यारिया बड़ा होता है तब अकेला कमाकर घर के लोगों की परवरिश करता है। गरीबी के कारण उसे रहने के लिए ठीक घर भी नहीं है। घर के छत की मरम्मत करने के लिए लोन निकालने की तरकीब सोचता है और अपने दोस्तों को कहता है तब दोस्त हँस कर कहते हैं - ''यार, तू भी कमाल करता है। छत मरम्मत करवाने के लिए लोन मिलेगा ? कोई नया मकान बनाना होता, या बहन-बेटी की शादी-वादी करनी होती तो भी कोई वजह बनती।''[13]

दोस्त भी मदद करने के बजाय उसकी हँसी उड़ाते हैं। प्यारिया छत की मरम्मत करने के सोच में परेशान रहता है। मध्यवर्गीय लोगों को ठीक-तरह से रहने के लिए घर भी नहीं मिलता है।

'नौवें दशक की दोस्ती' -

प्रस्तुत कहानी में नायिका मधुरिमा अच्छे खानदान की जिम्मेवार औरत है। उसके दोनों ही बच्चें शहर में पढ़ते हैं। पति अपने ही काम में व्यस्त रहता है। मधुरिमा अकेली ही घर में रहती

है। उसका पड़ोसी मध्यवर्गीय युवक सुरेश मधुरिमा को हर रोज देखता है। मधुरिमा सोच में पड़ती है। एक दिन मिलकर उसे सब बताती है। तब सुरेश उसके सामने दोस्ती का हाथ बढ़ाता है। थोड़े ही दिनों में सुरेश अपना रास्ता बदल देता है। सुरेश भी शादी शुदा है। अंत में मधुरिमा पश्चाताप करके अकेलापन महसूस करती है। आज जिम्मेवार युवक व युवतियाँ भी फुसलाए जा रहे हैं।

'पापा तो बस' -

कहानी का नायक रमाकांत तीन साल पहले बी. ए. कर चुका है और तब से नौकरी की तलाश में भटकता है। रमाकांत प्राईवेट लॉ की पढ़ाई भी करता है और घर खर्च के लिए कुछ लड़कों को पढ़ाता भी है। खर्चा थोड़ा तो चलता है पर तंगी बहुत है। रमाकांत एक निम्न-मध्यवर्गीय सात प्राणियोंवाले परिवार का बड़ा लडका है। रमाकांत एक दिन इंटरव्हयू (मुलाखत) देने के लिए शहर में जाता है। पैसा बहुत खर्च होता है। उसे घर आने के लिए पैसों की जरूरत पड़ती है। तब वह शरीफ लोगों की बस्ती में जाता है। वहाँ उसे चोर, हत्यारा, आतंकवादी समझकर लोग मार-पीट करते हैं। गरीबी के संकेत स्पष्ट रूप से इस कहानी में मिलते हैं।

'अनार के फूल' -

कहानी की नायिका नूरा मध्यवर्गीय परिवार की पढ़ी-लिखी लड़की है। वह नौकरी भी करती है। नूरा घरवालों के विरूद्ध या मर्जी के खिलाफ मुसलमान युवक के साथ शादी करती है। लेकिन पति के घर में भी उसे सम्मान नहीं मिलता।

कहानी का दूसरा पात्र नूरी भी तलाक शुदा है। उसका मर्द बेवफा निकलता है। बुआ की लड़की के साथ शादी करता है। नूरी अपने बच्चों को लेकर जी-तोड़ मेहनत करती है। मध्यवर्गीय समाज में आंतर्जातीय विवाह को अभी भी स्वीकार नहीं किया जाता।

'मुक्ति प्रसंग' -

कहानी में उच्च-मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है। परिवार के प्रमुख निलकंठ का देहांत होता है। निलकंठ के तीनों बेटे अफसर हैं। बेटे पिताजी का श्राद्ध करने के लिए गंगा-घाट पर

आते हैं। जब तक पिताजी जिंदा थे, तब तक बेटे उसकी सेवा नहीं करते। किंतु मृत्यु होने पर उनका सम्मान करते हैं। दान करने से मंत्र, जाप पढ़कर श्राद्ध करने से पिता के ऋण से मुक्त होने की भावना मन में रखते हैं। इस तरह आज का समाज शिक्षित होकर भी अंधश्रद्धा पर विश्वास रखता है। इसका चित्रण कहानी के माध्यम से किया है।

'वितस्ता की जहर' -

कहानी में मध्यवर्गीय हिंदू-मुस्लिम परिवार के लोगों का चित्रण किया है। यह लोग आपस में भाई-भाई की तरह रहते हैं। उनमें कोई बैर-भावना नहीं है। लेकिन कुछ बद दिमाग लोग धर्म के नाम पर उनमें विभेद करते हैं। आतंक फैलाते हैं। धर्म के नाम पर पाकिस्तान के फूसलाए गए आतंकवादी खून ख़राबा, दंगा फसाद करते हैं। गरीब लोगों के कत्ल करते हैं। इसका यथार्थ चित्रण कहानी में किया है।

'हत्यारा' -

यह कहानी अंधश्रद्धा पर आधारित है। कहानी का नायक वीरसिंह मध्यवर्गीय युवक है। वह अपने बच्चे, पत्नी और पिता के साथ सुखी-जीवन बिताता है और खेती करता है। लेकिन उसी ही गाँव का नसासिंह नामक युवक कुछ दिन दूसरे शहर में जाकर कुछ मंत्र सिखकर गाँव वापस आता है। वह खुद को 'औतार' समझता है। और अपना 'औतार' पन दिखाने के लिए गाँववालों को बुलाकर वीरासिंह के बच्चे को काँट देता है। फिर उसे जिंदा करने की कोशिश करता है। अंधश्रद्धा के कारण वीरा के दोनों बच्चों की जान जाती है। इस हदसे से पागल होकर वीरा गाँव के हर बच्चे के हाथ में हत्यार देना चाहता है। मध्यवर्गीय समाज में अंधश्रद्धा आज भी बहुत मायने में चल रही है। इसका चित्रण कहानी के माध्यम से लेखिका ने किया है।

'मोह' -

कहानी में मध्यवर्गीय बूढ़ी गुणी का चित्रण किया है। गुणी तीन बेटे की माँ है। गुणी के तीनों बेटे शहर में नौकरी करते हैं। बेटे गुणी को अपने साथ आने के लिए कहते हैं। लेकिन गुणी का

अपने गाँव के प्रति मोह नहीं छुटता। अकेली ही गाँव में रहकर जीवन बिताती है और अकेलापन महसूस करती है।

'करीने के कायल' -

कहानी में मध्यवर्गीय दाम्पत्य का चित्रण किया है। कहानी की नायिका जुतशी के पति शहर में नौकरी के लिए जाते हैं। महानगर की भीड़ भरी जिंदगी जीने के लिए उन्हें अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। जुतशी के पति संतान नहीं चाहते लेकिन जुतशी संतान चाहती है। जुतशी के पति बच्चे न होने के लिए जुतशी को गोलियाँ खाने देता है। जुतशी जब अपने देवर की शादी में जाती है तो उसे अनेक महिलाएँ टोकती हैं। ''फूफी ने कहाया, पाँच-एक साल में भी जिसकी गोद भराई नहीं हुई।''[14] जुतशी संतान न होने के कारण नाराज होती है। मध्यवर्गीय समाज में निसंतान नारी को स्थान नहीं दिया जाता। इसका चित्रण कहानी में किया है।

'एक युद्ध और' -

कहानी में मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है। कहानी की नायिका मेघा अपने भाई की पुत्री मुन्नी की शादी के लिए जाती है। मेघा शादी में अपने पुराने रीति-रिवाजों को सँभालकर रखना चाहती है। लेकिन आजकल पुराने रीति-रिवाज टूटते जा रहे हैं। इससे वह चिंतित हैं। अपने सगे भाई और भाभी भी अपने से दूर जा रहे हैं। इस से वह नाराज होती है। इसका चित्रण मेघा के माध्यम से कहानी में किया है।

'बावजूद इसके' -

कहानी का नायक शरद और नंदी दोनों बचपन से एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। लेकिन दोनों की शादी नहीं होती। शरद कुछ दिन बाद विदेश चला जाता है और नंदी के पिता किसी दूसरे युवक के साथ नंदी की शादी करते हैं। बहुत दिनों के बाद नंदी और शरद मिलते हैं तो अपना प्रेम प्रकट करते हैं। दोनों अलग-अलग जाति के होने के कारण उनका विवाह नहीं होता। मध्यवर्गीय समाज में आंतर्जातिय विवाह को मान्यता नहीं दी जाती। इसका चित्रण कहानी में किया है।

'फिलहाल' -

कहानी की नायिका आरती मध्यवर्गीय परिवार में रहनेवाली पढ़ी-लिखी लड़की है। वह नौकरी भी करती है। आरती अपनी अंधी माँ और बीमार बहन को सँभालती है। उसका भाई राजन शादी होने के बाद अपने पत्नी के साथ अलग रहता है। माँ, बहन की चिंता नहीं करता। आरती अंत तक कुँवारी रहकर अपनी अंधी माँ और बीमार बहन की सेवा करती है।

'धराशायी' -

कहानी में एक मध्यवर्गीय नारी के संघर्षपूर्ण जीवन का चित्रण किया है। कहानी की नायिका वी. वी. किसी 'पन्नालाल ट्रेडर्स' में काम करती है। कंपनी के मालिक सत्याग्रही साहब अपनी प्रशंसा करनेवाले आदमी को ही पदोन्नति देते हैं। वी. वी. हर वक्त अपने काम में व्यस्त रहनेवाली ईमानदार औरत है। फिर भी उसे पदोन्नति नहीं दी जाती। तब वी. वी. सत्याग्रही साहब विरूद्ध आवाज उठाती है। हड़ताल, मोर्चा निकालती है। आज मध्यवर्ग की नारी शिक्षित होकर नौकरी करती हुई, अन्याय के विरूद्ध आवाज उठा रही है। इसका चित्रण कहानी में किया है।

'नूराबाई' -

कहानी में मध्य वर्ग की नारी को कितना अत्याचार सहना पड़ता है इसका चित्रण किया है। कहानी की नायिका नूरा एक मध्यवर्गीय परिवार में रहती है। पति शराब और वेश्या के पास जाने के कारण बीमार पड़ता है। घर में ही रहता है। अकेली नूरा को ही जी-तोड़ मेहनत करके घर चलाना पड़ता है। उसे पति का मित्र जद्देशाह कठीन समय पर मदद करता है। लेकिन वही जद्देशाह एक दिन नूरा पर बलात्कार करता है। नूरा चुप-चाप सहन करने के सिवा कुछ नहीं कर सकती। कहानी का दूसरा पात्र सेठ भी उसकी बेटी हसीना की इज्जत लूटता है। नूरा सेठ से जवाब पूछने जाती है, तो सेठ नूरा को पुलिस की धमकी देकर वापस भेजता है। जद्देशाह भी नूरा की बेटी पर बलात्कार करता है। उसी समय नूरा आती है और जद्देशाह का खून करती है। मध्यवर्गीय परिवार में रहनेवाली नूरा को गरीबी के कारण उच्च लोगों के हवस की शिकार बनना पड़ता है। इसका यथार्थ चित्रण कहानी में किया है।

चंद्रकांता की कहानियों में गरीबी, अत्याचार, विवाह, टूटते परिवार असफल प्रेम, असफल दांपत्य जीवन का चित्रण अधिक मात्रा में है। यह सब निम्न-मध्यवर्गीय और मध्यवर्गीय परिवार में घटित हुआ है। इसका चित्रण कहानियों में मिलता है।

निष्कर्ष -

मध्यवर्गीय समाज जीवन दिन-ब-दिन जटिल होता जा रहा है। मध्यवर्गीय समाज आर्थिक, सामाजिक वैचारिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से आपस में समानता रखता है। वर्तमान भारतीय समाज में मध्यवर्गीय समाज ही अधिक संख्या में प्राप्त है। चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित कुछ मध्यवर्गीय समाज के पात्रों या परिवारों की आय का स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है। तो कुछ का नहीं मिलता। उनकी सभी कहानियों में सामान्य मध्यवर्गीय समाज और निम्न मध्यवर्गीय समाज का चित्रण हुआ है।

विवेच्य कहानियों में मध्यवर्गीय समाज-जीवन में आज भी विवाह-विषयक कई रीतियाँ प्रचलित हैं। आजादी के बाद शिक्षा की लहर तेजी से बढ़ने के कारण अनेक शिक्षित युवक-युवतियाँ प्रेम-विवाह करने लगे हैं। कुछ प्रेम-विवाह असफल भी होते हैं। इस समाज में संयुक्त परिवार की परंपरा कम होती जा रही है।

आधुनिक युग में शिक्षा तथा विज्ञान का प्रसार औद्योगिकीकरण, वैयक्तिकता का विकास, नए दृष्टिकोण तथा आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तन आदि के कारण परिवार का विघटन तेजी से हो रहा है। पति-पत्नी में सच्चे प्रेम का अभाव होने के कारण तथा तीसरे व्यक्ति का आगमन होने के कारण दांपत्य जीवन सफल नहीं होता है।

विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित मध्यवर्गीय समाज रूढ़ि-परंपराओं तथा रीति-रिवाजों से इतना चिपक गया है कि वह उन्हें छोड़ नहीं सकता। इसमें अलग-अलग प्रसंगों पर अलग-अलग रूढ़ि-परंपरा और रीतियाँ प्रचलित हैं।

मध्यवर्गीय समाज में आय के स्त्रोत अत्यंत सीमित हैं। नौकरी ही उस समाज की आय का साधन है। अर्थ के अभाव के कारण मध्यवर्गीयों को जीवन जीना दुश्कर हो गया है। आज अर्थ को ही महत्त्व प्राप्त हो गया है। अर्थ प्राप्ति के लिए मानव चोरी, लाचारी, भ्रष्टाचार आदि का सहारा लेता है। चंद्रकांता की कहानियों में निम्न-मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण उनकी अभिव्यक्ति का केंद्र बिंदू रहा है।

संदर्भ सूची

1. धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश - भाग-1, पृ. 449
2. वीणा गौतम, आधुनिक नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना, पृ. 20
3. रामचंद्र वर्मा, मानक हिंदी कोश, पृ. 284
4. धीरेंद्र वर्मा, हिदं साहित्य कोश - भाग-1, पृ. 612
5. गोविंद सदाशिवधुर्ये, जाति, वर्ग और व्यवसाय, पृ. 264
6. भपसिंह भूपेंद्र, मध्यवर्गीय चेतना और हिंदी उपन्यास, पृ. 12
7. Middle class the class of society between 'Upper' and the 'Lower' class दि कम्पेक्ट एडिशन ऑफ दि ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी, पृ. 1790
8. अर्जुन चव्हाण, राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृ. 76
9. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 26
10. वही, पृ. 47
11. वही, पृ. 140
12. वही, पृ. 184
13. वही, पृ. 192
14. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 51